# गेहूं अधिक उत्पादन हेतु सुझाव

## एल.एस.डब्ल्यु. 2122

## क्रान्ति

## केसर

लक्ष्मी सीड्स
दो पानी वाली गेहूं किस्म
Kesar
रिसर्च गेहूं किस्म
AN ISO 9001:2008 CERTIFIED CO.
लक्ष्मी सीड्स का वादा
पैदावार सबसे ज्यादा
लक्ष्मी सीड्स
केसर
गेहूँ
Produced, Packed A Marketed By
LUXMI SEEDS CORPORATION
194, Jawahar Market, Sri Ganganagar, Rajasthan 335001

# भूमि का चुनाव और तैयारी

सिचाई की सुविधा के साथ गेहूं की खेती सामान्यतः सभी प्रकार की भूमि में की जा सकती है। किन्तु अच्छी पैदावार को लिये बलुई दोमट से चिकनीए दोमट समतल एवं उत्तम जल निकास वाली भूमि उपयुक्त है।

# खेत की तैयारी एवं भूमि का प्रकार

सिंचाई की सुविधा के साथ गेहूं की खेती सामान्यतः सभी प्रकार की भूमि में की जा सकती है। किन्तु अच्छी पैदावार के लिए बलुई दोमट मिट्टी इस फसल के लिए उपयुक्त रहती है। इसके लिए एक गहरी जुताई के बाद 2-3 हल्की जुताइयाँ देशी हल, कल्टीवेटर/रोटावेटर द्वारा करके मिट्टी को भुरभुरा बना लें। अंतिम जुताई के समय खेत को समतल करें ताकि सिंचाई व जल निकास में कोई समस्या न हो । आवश्यकता अनुसार पलेवा देकर उचित नमी की स्थिति में बिजाई करें

# बुवाई का समय व बुवाई की विधि

समय पर मुबाई नवम्बर माह में 5 नवम्बर से 25 नवम्बर तक करें। सबसे उपयुक्त समय 10 नवम्बर से 20 नवम्बर तक है।

बुवाई करत समय कतार से कतार की दूरी 20 से 25 सेमी. व गहराई 5 सेमी. से अधिक न रखें।

# भूमि उपचार/बीज उपचार

जहाँ स्मट (काग्या) का प्रकोप सम्भावित हो वहां बुवाई के समय बीज को मेन्कोजेब (डब्ल्यू.पी.) 2 ग्राम प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित किया जा सकता है। इस बीजोपचार से अकुरण क्षमता भी बढ़ती है। गेहूँ में करनाल बंट और जड़ गलन रोग की रोकथाम हेतू कार्बोक्सिन (37.5 प्रतिशत) + थाइराम (37.5 प्रतिशत 75 प्रतिशत डब्ल्यू.एस.) से 2 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से बीजों का उपचार करे और ईयर कोकल व टुण्डू रोग से बचाव के लिये जिन खेतों में इस रोग का प्रकोप हो उनमें अगले कुछ वर्षों में गेहूँ नहीं बोया जाये।

# बीज की मात्रा

समय पर बिजाई 35-40 किलो प्रति एकड़ डालें। पिछेती बुवाई के लिए 40-45 किलो प्रति एकड़ डालें।

# सिंचाई

गेहूं की फसल में लगभग 5.6 सिंचाई की आवश्यकता होती है। प्रथम सिंचाई फसल बोने के 25 से 30 दिन बाद जड़ जमने की अवस्था पर अवश्य करें।

नोट: हमारी रिसर्च गेहूं किस्म केसर में 2 सिंचाई की आवश्यकता होती है।
प्रथम सिंचाई बुवाई के 25 से 30 दिन बाद व द्वितीय सिंचाई 75 से 80 दिन बाद करें।

# खाद / उर्वक की मात्रा

भूमि की उर्वरा शक्ति में वृद्धि के लिए फसल चक्र में 50 क्विंटल गोबर की खाद का प्रति एकड़ के हिसाब से प्रयोग करें। . बुवाई के समय उर्वरकों में 33 किलों यूरिया एवं 62.5 किलों एस एस.पी. (सिगल सुपर फॉस्फेट) एवं 22 किलों डी.ए.पी. एवं 24 किलों यूरिया का प्रयोग करें। . खड़ी फसल में उर्वरकों का प्रयोग करते समय भारी व मध्यम मिट्टी वाली भूमि में पहली सिचाई के समय 33 किलों यूरिया का प्रयोग करे और हल्की मिट्टी वाली भूमि में द्वितीय सिचाई के समय 18.5 किलो यूरिया का प्रयोग करें। . खड़ी फसल में जिंक की कमी के लक्षण प्रकट होने पर 2-3 किलों जिंक सल्फेट (कॉमर्शियल ग्रेड) एवं 1250 ग्राम बुझा चुना 150 से 175 लीटर पानी में डालकर प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करें।

# खरपतवार नियंत्रण एवं निराई-गुड़ाई

गेहूँ में चौड़ी पत्ति वाले व सकरी पत्ति वाले खरपतवारों के रासायनिक विधि से नियत्रण करने के लिए कृषि विभागिय सिफारिशों का इस्तेमाल करें।

# कटाई

जब बालियाँ पूरी तरह पक जाएँ और दाने सख्त हो जाएँ, तब फसल की कटाई करें।
आजकल कंबाइन हार्वेस्टर से कटाई करने पर समय और लागत दोनों
की बचत होती है।

# टिप्पणी

ऊपर दी गयी सलाह हमारे अनुभवए फील्ड ट्रायल एवं अनुसंधान केन्द्रों पर किये गये प्रयोगों पर आधारित है। लेकिन प्राकृतिक कारण जैसे जलवायुए भूमि का प्रकार एवं कृषि पतियों के कारण उपरोक्त जानकारी में अन्तर हो सकता है। बीज की गुणवत्ता के अलावा हम किसी तरह की गारन्टी नहीं ले सकते। क्योंकि अन्य परिस्थितियाँ हमारे नियंत्रण से बाहर है। ऊपर दी गई जानकारी किसान भाईयों की समृद्धि और सफलता के लिए है।